P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
Title Code:UPBIL04788
Vol-I * Issue- IV* July - 2016

टाना भगत आन्दोलन

राजकुमार
सहायक प्रोफेसर,
इतिहास विभाग,
एस0एस0 ममोरियल कॉलेज,
रॉची विश्वविद्यालय,
रॉची

सारांश

जनजातीय बाहुल्य झारखण्ड प्रदेश में उरॉव आबादी की दृष्टि से दूसरे स्थान पर है । झारखण्ड में अंग्रेजों के प्रवेश से पूर्व ही यहॉ गैर जनजातीय समुदायों का बसना शुरू हो गया था । समय के साथ–साथ इन गैर जनजातिय समुदायों ने जनजातीय लोगों के आधारभूत संरचनाओं एवं संसाधनों पर शनैः शनै कब्जा जमाना प्रारंभ कर दिये थे । अंग्रेजों के आगमन तक स्थिति जटिलतम हो चुकी थी । जनजातीय समुदाय एक त्रिकोण बंदिश में अपने को महसुस कर रही थी, जिसके एक छोर पर अंग्रेजी शासन, दूसरे छोर पर साहुकार (दिक्कू) व जमींदार तो तीसरे छोर पर ईसाई मशीनरियों का पहरा बैठा था । सम्पूर्ण उरॉव प्रदेश में इनकी स्थिति दमघोटू हो गयी थी । बिरसा मुण्डा का आन्दोलन पूरी तरह से कुचला जा चुका था । चहूँओर घनघोर निराशापूर्ण परिस्थिति थी । उरॉवों को विश्वास हो गया था कि अब धर्मेश ही उन्हें बचा सकते है ।

ठीक इसी समय, जतरा भगत का अवतरण उरॉव जनजातियों के लिये धर्मेश का ही एक वरदान था । जतरा भगत ने समझा कि इस त्रिकोण बंदिश से मुक्ति का एकमात्र रास्ता है, उरॉव समाज में उपजे अंध विश्वासों पर कुठाराद्यात । जतरा के उपदेशों में उरॉवों को अलौकिक शक्तियों की अनुभूति होने लगी थी और उसके अनुयायियों की संख्या लगातार बढ़ने लगी । जल्द ही जतरा भगत उरॉवों का सर्वमान्य अगुवा बन गये और उसके अनुयायी टाना भगत कहे जाने लगे ।

जतरा भगत ने उरॉव समाज में फैले अंध विश्वासों पर जमकर चोट किया । भूत–प्रेत, बलि प्रथा, मदिरा पान, जादू–टोना इत्यादि बुराईयों के सम्मूलन ही जतरा का उद्देश्य बन गया । उसने अपने आन्दोलन में नारियों की सहभागिता पर भी जोर दिया । देवमनियां देवी इसकी उदाहरण है । जतरा ने उरॉव समाज की दबी हुई प्रतिष्ठा व स्वाभिमान को झकझोर कर रख दिया । परिणामस्वरूप उरॉवों ने जमींदारों एवं साहूकारों के यहॉ बेगारी तथा कुलीगिरी का काम बंद कर दिया । जतरा के बढ़ते प्रभाव से जमींदारों एवं साहूकारों में हाहाकार मच गया । ईसाई मशीनरी एवं अंग्रेजी सरकार भी जतरा के आन्दोलन में अपना अहित देख रही थी । अतएवं जतरा को गिरफ्तार कर कारागार में डाल दिया गया, जहॉ उसे इतनी शारीरिक एवं मानसिक प्रताड़ना झेलनी पड़ी कि जेल से छुटते ही जतरा भगत मौत के आगोश में समा गये ।

जतरा भगत के मृत्यु उपरॉत उनका आन्दोलन उरॉव प्रदेश में जोर पकडने लगा । टाना भगत आन्दोलन ने क्षेत्रवार कई नेताओं को जन्म दिया । अपितु बाद के दिनों में आन्दोलन पथ से कुछ भटकता भी नजर आया । टाना भगत आन्दोलन के अनुयायी जुलाहा भगत, अरूवा भगत और गौ–रक्षणी भगत के रूप में बंटते चले गये । परन्तु सभी का उद्देश्य एक ही था– आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक स्वराज्य प्राप्त करना । यही कारण था कि बाद में टाना भगत आन्दोलन गॉधी जी के स्वतंत्रता आन्दोलन के पथगामी बन गये ।

बाद के दिनों में, टाना भगत आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के रास्ते चल पड़ा । झारखण्ड के इतिहास में, स्वराज्य के लिये टाना भगतों जैसी कुर्बानियों का कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता है । स्वराज्य की लड़ाई में टाना भगतों का घर–जमीन सब कछ तबाह हो गया ।

आजादी के 69 वर्ष बीत जाने के बावजूद आज भी टाना भगतों के 2486 एकड़ जप्त भूमि और उनके उपर 703 मुकद्में झारखण्ड के न्यायालयों में चल रहे है ।

मुख्य शब्द : टाना– खींचना, धर्मेश– उरॉव जनजातीय समुदाय का देवता, मति विद्या– भूत–प्रेत, जादू–टोना, डाईन बिसाईन के प्रकोप को दूर करने वाला विद्या, मिशन– ईसाई धर्म प्रचारक समूह की गतिविधि,

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
Title Code:UPBIL04788
Vol-I * Issue- IV* July - 2016

गौ–रक्षणी– गाय के रक्षक, पीतर– पीतल, दोना पतरी– पेड़ के पत्ते से बना कटोरी एवं थाली, दारू– शराब

प्रस्तावना

रॉची कारावास में 09 जून, 1900 को जिस प्रकार से बिरसा मुण्डा की मौत संदेहास्पद स्थिति में हुई, उसके साथ ही बिरसा आन्दोलन सदा के लिये दब गया, जनजातिय समाज स्तब्ध था । बिरसा आन्दोलन की असफलता से सम्पूर्ण झारखण्ड में सर्वत्र निराश छाई हुई थी । शोषक–शासक एवं मिशनरी वर्ग पागल हाथी की भांति जनजातिये सम्मान को रौंद रहे थे । अंग्रेज गर्वनर के ऐशो–आराम के लिये नेतरहाट उपत्यका को विकसित किया जा रहा था । पहाड़ों पर सड़क एवं अंग्रेजी बंगला निर्माण के लिये आसपास के जनजातिय लोगों का उपयोग बैल एवं खच्चर की भांति किया जा रहा था । अत्याचार, दुर्यव्हार एवं अमानवीय यातना से त्राहिमाम जनजातिय समाज दोनों हाथ उठाकर आसमान को देखते थे, शायद धर्मेश कोई मुक्ति दाता भेजे ।

प्राकृत प्रेम, भोले–भाले एवं ईमानदार जनों की प्रार्थना व्यर्थ नहीं गयी । सुविख्यात टाना भगत आन्दोलन का जनक जतरा टाना भगत का जन्म गुमला जिले के विशुनपुर प्रखण्ड के अन्तर्गत चिंगरी नावाटोली में सितम्बर (आश्विन) महोन के अष्टमी तिथि का 1888 ई0 में हुआ । पिता का नाम कोडला उरॉव और माता का नाम लिबरी उरॉईन था । जतरा भगत की पत्नी का नाम बंधनी उरॉईन एवं चार बेटा बुधु, बंधु, सुधू, देशा तथा दो बेटियॉ बिरसो और बुधनी थी ।

प्रारंभिक अवस्था में जतरा भगत, गुरूग्राम हेसराग के श्री तुरीया भगत से मति विद्या (ओझा–गुनी) सीखने जाया करते थे । इसी क्रम में एक दिन वह एक पेड़ पर पंक्षी का अण्डा उतारने के लिये चढ़े तो वह अण्डा नीचे गिर कर फूट गया । जिसमें जतरा ने भ्रण देखा और उसके मन में आया कि यह तो जीवहत्या है, उसी दिन से उसने जीवहत्या नहीं करने का संकल्प लिया । इसी प्रकार सन् 1914 ई0 के अप्रैल माह में एक दिन जब जतरा मति विद्या सीखने जाने के क्रम में गुरदा कोना पोस्टर में स्नान करने गये, वहीं अचानक उन्हें आत्म बोध हुआ । उन्होने समझा कि यदि तंत्र–मंत्र से बड़ी–बड़ी बिमारियॉ ठीक हो सकती है, लोगों का आत्म विश्वास लौट सकता है तो क्यों नहीं इसके माध्यम से समाज में व्याप्त अत्याचार रूपी बोमारी ठीक किया जाय । जतरा ने बताया कि उसे जल के अंदर धर्मेश (उरॉव जनजाति के सर्वोच्च देवता) ने दर्शन दिया है और कहा है कि वह मतिभाव सीखना बंद कर दे और भूत–प्रेत तथा बलि इत्यादि में विश्वास करना छोड़ दें ।

इस घटना के पश्चात् जतरा उरॉव अब जतरा भगत के रूप में सर्वमान्य हो गया । जतरा ने लोगों से कहा कि धर्मेश नहीं चाहता कि लोग जमींदारों, अन्य धर्मावलंबियों तथा गैर–आदिवासियों के यहॉ कुलियों एवं मजदूरों का काम करें । उसने घोषणा की कि ईश्वर ने उसे जनजातियों का नेतृत्व सौपा है, वहीं उन्हें सच्चा मार्ग दिखायेगा। इस तरह टाना– भगत आन्दोलन की शुरूआत अप्रैल 1914 ई0 में हुई । वस्तुतः टाना भगत उरॉवों की वह शाखा ह जिसने कुड़खों के मूल धर्म कुड़ुख धर्म को अपना लिया ।'टाना' शब्द का अर्थ है– टानना या खींचना । उरॉव जनजाति इस आन्दोलन के माध्यम से अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को शीघ परिवर्तन कर स्थापित करना चाहते थे ।

टाना भगत आन्दोलन का केन्द्र उरॉव जनजातिय बहुल्य क्षेत्र विशुनपुर, घाघरा, गुमला, रायडीह, चैनपुर, पालकोट, सिसई, लापुंग, कुडु तथा मांडर क्षेत्र बना । टाना भगतों ने समझा कि अपनी स्थिति सुधारने का एकमात्र तरीका ईश्वर की आज्ञा मानना और उससे तादात्म्य स्थापित करना ही है । इसके लिये सभी अपवित्र वस्तुओं का परित्याग और जीवन की शुद्धता जरूरी है । उनका विश्वास था कि धर्मेश सभी को बराबर देखता है और चाहता है कि लोग उसकी आज्ञा का पालन करें । वह उन वस्तुओं का विनाश करता है जो लोगों को नुकसान पहचाती है ।

एक समकालीन महिला देवमनियां जो सिसई थाना के बमुरी ग्राम की निवासी थी, वह इस आन्दोलन से सम्बद्ध हुई । उसने जतरा भगत और उसके टाना भगत आन्दोलन की काफी सहायता की । जतरा भगत के नाम से जुड़े भक्ति गीत, देश प्रेम की भावना से ओत–प्रोत है । इन गीतों में विदेशी वस्तुओं के प्रति उनकी धृणा की भावना स्पष्ट प्रकट होती है । धीरे–धीरे यह आन्दोलन जमींदार, मिशन तथा ब्रिटिश सरकार विरोधी बनता चला गया ।

जतरा भगत द्वारा आरंभ किया गया यह आन्दोलन सम्पूर्ण उरॉव प्रदेश में जंगल की आंग की तरह फैला रही थी । लोगों ने जमींदारों और अन्य गैर आदिवासियों का काम करना बन्द कर दिया । जमींदारों, मिशनरियों तथा गैर आदिवासी व्यापारियों में जतरा भगत का भय समा गया । जतरा भगत के द्वारा अपने अनुयायियों को मजदूरी करने से रोकने तथा सरकारी नियम के विरूद्ध उकसाने के अपराध में उसे तथा उसके सात अनुयायियों को अनुमण्डल पदाधिकारी, गुमला की कचहरी में मुकदमा चला ।

1916 में जतरा भगत को एक वर्ष की सजा हुई और बाद में उसे इस शर्त के साथ छोड़ा गया कि वह अपने नये सिद्धांतों का प्रचार नहीं करेगा और शांति बनाये रखेगा । किन्तु जेल में मिली घोर प्रताड़ना से जतरा भगत उबर नहीं सका । फलस्वरूप जेल से बाहर आने के दो माह के भीतर ही उसकी मृत्यु हो गयी ।

जतरा भगत नेपथ्य में चला गया किन्तु उसका आन्दोलन जोर पकड़ने लगा । मांडर क्षेत्र में शिबु भगत ने आन्दोलन का प्रचार–प्रसार किया, किन्तु थोड़ी सफलता के साथ ही वह मार्ग से भटक गया । शिबु भगत ने दामोदर नदी के तट पर काले बकरे की बलि देकर उसके मांस को अपने अनुयायियों में वितरित किया और कहा कि आन्दोलन का ध्येय प्राप्त हो चुका है और अब टाना भगत मांस खा सकते है । मांडर क्षेत्र के ये टाना भगत मांसभक्षी होने के कारण **जुलाहा भगत** कहे गये और जिन लोगों ने शिबु भगत का अनुसरण नहीं किया वे **अरूवा भगत** कहलाये क्योंकि वे केवल अरवा चावल ही खाते है।

घाघरा क्षेत्र में बेलगाड़ा निवासी बलराम भगत ने भगत सम्प्रदाय की बागडोर संभाली । उसने गो–पूजन पर अधिक जोर दिया । उसने गाय–बैलों को हलों में

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
Title Code:UPBIL04788
Vol-I * Issue- IV* July - 2016

जोतना अनुचित बतलाया । बलराम के अनुयायियों ने खेती करना छोड़ दिया और पशुपालक बन गये । वे दूध का सेवन करने लगे और अतिरिक्त दूध, घी, दही बेचने लगे । ये **गौ–रक्षणी भगत** कहे जाने लगे । यह गौ–रक्षणी भगत मुख्यतः घाघरा एवं गुमला में रहत है ।

उरॉव ग्राम बिशुनपुर में भीखू भगत ने विष्णु सम्प्रदाय का मार्ग अपनाया । अन्य भगतों की भांति वह भी अंग्रेज विरोधी था । अंग्रेज एवं मिशन के भय से वह अपना आन्दोलन गुप्त रूप से चलाता था । वह वृहस्पतिवार की रात में बैठके करता तथा महत्वपूर्ण निर्णय लेता था ।

1916 ई0 के अंत तक टाना भगत आन्दोलन रॉची जिला के दक्षिणी–पश्चिमी भागों में तथा पश्चिमी भाग को लांघता हुआ मध्य भाग एवं उत्तरी भागों में फैल गया । उत्तर की ओर वह पलामू तक विस्तृत होता चला गया ।

टाना भगत आन्दोलन ने शासन के समक्ष चार प्रस्ताव रखें

1. उन्हें **स्व–शासन** प्रदान किये जाय ।
2. राजा का पद समाप्त कर दिया जाय ।
3. समानता स्थापित हो ।
4. भूमि कर समाप्त किया जाय, क्योंकि भूमि ईश्वर प्रदत्त है ।

टाना भगतों के मांग ठुकराये जाने के कारण स्थिति टकराव की हो गयी ।

रात्रि बेला में नये धर्म के इन अनुयायियों की बड़ी संख्या जगह–जगह एकत्रित होने लगी और सूर्योदय तक धार्मिक अनुष्ठान चलने लगे, जिससे जमींदार, ईसाई मिशनरी और गैर आदिवासी व्यापारी आतंकित हो गये । टाना भगतो ने जमींदारों को कर देना बंद कर दिया और उनके खेतों की जुताई करना भी बंद कर दी । अतः जमींदार और साहुकारों ने संभावित विद्रोह से भयाक्रांत होकर इसकी शिकायत पुलिस में की । शासन द्वारा टाना भगतों की सभायें एवं धार्मिक अनुष्ठान अग्रेजो व ईसाई मिशनरियों के विरूद्ध षड़यंत्र के रूप में देखे जाने लगे । टाना भगतों के इन सभाओं को गैर कानूनी धोषित कर प्रतिबंध लगा दिया गया और बहुतों को शांति भंग करने के नाम पर कचहरियों तक घसोटा गया ।

टाना भगत आन्दोलन, ब्रिटिश शासन के दमन के कारण शिथिल पड़ने लगा । उनका नया धर्म भी भूमि संबंधी अधिकारों की रक्षा में अक्षम सिद्ध हुआ । टाना भगत समझने लगे कि केवल धार्मिक आवेग से आन्दोलन बहुत देर जिन्दा नहीं रह सकता इसके लिये राजनीतिक आधार जरूरी है ।

1921 में जब महात्मा गॉधी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू किया तो सिद्धु भगत के नेतृत्व में टाना भगत स्वतंत्रता आन्दोलन में शामिल हो गये । उनके अनुसार जतरा भगत का पुर्नजन्म ही महात्मा गॉधी के रूप में हैं । वे गॉधी जी को जतरा भगत का पर्यायवाची मानते थे । अतः उन्होने चरखा को अपनाया और केवल खादी वस्त्रों का उपयोग करने का संकल्प लिया । टाना भगतों ने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया । टाना भगत आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़कर एक राजनीतिक आन्दोलन बन गया ।

महात्मा गॉधी को खद्दरधारी, गॉधी टोपी पहने, हाथ में तिरंगा, शंख एवं घंटी बजाते टाना भगतों की टोली अत्यंत प्रिय थी । गॉधी जी और कॉग्रेस से जुड़ने के बाद कलकत्ता, लाहौर, गया, रामगढ़ आदि कॉग्रेसी अधिवेशनों में टाना भगतों ने भाग लिया । महत्वपूर्ण बात यह है कि वे सभी लंबी यात्रायें इन्होने पैदल की ।

1930 ई0 के बारदोली आन्दोलन से प्रभावित होकर इन्होने भी भूमि–कर देना बन्द कर दिया । फलस्वरूप जमींदारों ने उनकी जमीन निलाम करा दी । आज तक बहुत सारे टाना भगत भूमिहीन होकर बटाईदारी एवं कृषि मजदूर की जीवन जी रहे है । इन्हें विश्वास था कि सुराज आने पर उनकी भूमि वापस मिल जायेगी ।

आजादी के बाद 1947 में सरकार ने टाना भगत कृषि भूमि अधिनियम बनाया । जिसके तहत कुछ लोगों की भूमि वापस भी हुई । लेकिन यह अधिनियम पूरी तरह कारगर नहीं हो सका । 1989 में इस अधिनियम में संशोधन किया गया, फिर भी कार्य पूर्ण होना शेष है। 1966 में कर्पूरी ठाकुर ने **टाना भगत वेलफेयर बोर्ड** भी बनाया था । अपितु सरकार ने टाना भगतों को पेंशन, बच्चों को मुफ्त शिक्षा, आवासीय विद्यालय तथा छात्रावास की व्यवस्था की है किन्तु आज भी इनकी 2486 एकड़ भूमि वापस नहीं हुई है । इन पर 703 मामले अभी भी दर्ज है।

झारखण्ड के जंगल, पहाड़ एवं सुनी वादियों में खद्दरधारी, गॉधी टोपी पहले टाना भगतों के शंख एवं घंटी से आज भी जतरा भगत का उलगुलानी स्वर गुंज रहा है

ताना बाबा ताना, भुतनी का ताना,
तना तुन ताना,
कांसा पीतर मना, दोना पतरी खाना
मांस मदिरा मना, दारू मना
ताना बाबा ताना ।

उद्देश्य

आजादी के 69 वर्ष के पश्चात् भी झारखण्ड में टाना भगतों की माली हालात बेहद शोचनीय है । आर्थिक रूप से इनकी स्थिति बेहद कमजोर है और युवा पीढ़ी पलायन की स्थिति में है । बेरोजगारी, अशिक्षा, अंध विश्वास के भंवर जाल में टाना भगत अब भी पड़े हुये है । सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक रूप से उन्हें सजग करने का प्रयास समय–समय पर विभिन्न सरकारों द्वारा किया जाता रहा है। एकीकृत बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर ने कुछ ठोस प्रयास किये थे। 15 नवम्बर, 2000 को झारखण्ड राज्य का गठन हो गया परन्तु उनकी मॉगें एवं समस्याएँ यथावत है । आवश्यता है कि वर्तमान परिस्थितियों में टाना भगत आन्दोलन का मूल्यांकन किया जाय तथा उनकी जप्त भूमि एवं न्यायिक वादों को समाप्त करने की दिशा में भी सकारात्मक पहल किया जाय ।

निष्कर्ष

झारखण्ड प्रदेश गठन के उपरांत टाना भगत समुदाय के लोग प्रायः समूह बनाकर किसी–न–किसी राजकीय पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि, मंत्री या मुख्यमंत्री के आवास पर अपनी मॉगों के साथ घुमते नजर आ जायेंगें । श्वेत खद्दर वस्त्र, माथे पर गॉधी टोपी, एक हाथ में

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking An Analisation
Title Code:UPBIL04788
Vol-I * Issue- IV* July - 2016

तिरंगा झण्डा, दूसरे में घंटी ही टाना भगतों की पहचान है । ये टाना भगत किसी का दिया हुआ या छुआ हुआ, ग्रहण नहीं करते है। इनकी मेहनत, ईमानदारी एवं निश्चलता के बीच राष्ट्रीयता का सुगंधित बयार बहती रहती है । राज्य सरकार को चाहिये कि टाना भगत समुदाय के सर्वागीण विकास हेतु टाना भगत विकास बोर्ड या इस तरह की कोई अन्य संरचना विकसित हों ताकि इन्हें संरक्षित एवं सम्वर्धित किया जा सके ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ0 विजयपाणि पाण्डेय, डॉ0 प्रकाश चन्द्र उरॉव : जतरा भगत एवं ताना आन्दोलन, 1998
2. डॉ0 बी0 विरोत्तम : झारखण्ड के इतिहास एवं संस्कृति
3. एन0 प्रसाद : लैण्ड एण्ड पिपुल ऑफ ट्राइबल बिहार, बिहार ट्राईबल रिसर्च इंस्टीच्यूट, रॉची 1961
4. शहीद विशेषांक बुलेटिन : बिहार जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोराबादी, रॉची, जनवरी 1998